ओम् शांति! परमपिता शिव भगवानुवाच–बच्चों से सम्मुख परलौकिक परमपिता **P** यह महावाक्य उवाच रहे हैं। कहते हैं–बच्चे, मैं तुम्हारा बाप भी हूँ और फिर धर्मराज भी हूँ; क्योंकि तुम्हारे पाप और पुण्य का खाता मेरे पास है। तुम्हारे ही खाते में पुण्य बहुत देखने से तुमको अच्छा जन्म देता हूँ। फल तो मैं ही देता हूँ। भक्तिमार्ग में भी कहते हैं, पुण्य और पाप का कर्म हरेक आकर भोगते हैं। अच्छे कर्म करने से अच्छा जन्म मिलता है। अभी सबकी कयामत का समय है अर्थात् हिसाब–किताब चुक्तू करने का समय है। पहले इस हिसाब–किताब का पता न था। कयामत के समय ही आकर, पुराने पापों का खाता बद करवाकर, 21जन्म पुण्य का खाता बनवाते हैं। चौपड़ा सारा बुद्धि में रखना है। तो प्राणी को समझाया जाता है। प्राणी आत्मा को कहा जाता है। आत्मा चैतन्य, अविनाशी है। जैसे रूहानी बाप भी अविनाशी है। लौकिक बाप का तो शरीर चला जाता है, तो लौकिक बच्चों का भी शरीर चला जाता है। यह बाप इमार्टल है तो बच्चे(आत्माएँ) भी इमार्टल हैं। अब बाप कहते हैं–सोच करो, कितना जन्म व जन्म पाप का खाता भरा है, जिसको चुक्तू कराने लिए तुम बच्चों को हम योग सिखला रहे हैं। मोस्ट बिलवेड फादर है। ऐसे नहीं मोस्ट बिलवेड धर्मराज कहेंगे, नहीं। धर्मराज तो पूरा दण्ड देने वाला है। हिसाब–किताब चुक्तू करने वाला है। सज़ा कोई बाप नहीं दे सकता। अभी खुद कहते हैं मैं सम्मुख आया हुआ हूँ। तुम्हारा जो विकर्मों का खाता है वो चुक्तू होना है, फिर शुद्ध हो जावेंगे। तुम बच्चों को तो फिर राज्य–भाग्य देता हूँ। बाप का धर्म है बच्चों को सपूत बनाना। सभी तो सपूत नहीं होते। लौकिक बाप के भी कोई सपूत, कोई कपूत बच्चे होते हैं। कोई तो श्रेष्ठ मत पर चलते हैं; परंतु जब बाबा का बने। बोले, बाबा हम आपके ही थे, आपने हमको सुख के सम्बंध में भेजा 21जन्म, फिर माया ने पाप कर्म कराया। अभी यह है पापात्माओं की दुनिया। सत्युग है, धर्मात्मा–पुण्यात्मा की दुनिया। जन्म व जन्म पाप ही किये हैं। सिर्फ इस जन्म के नहीं हैं। तुम्हारे ऊपर जन्म–जन्मातंर के पापों का बोझा है। अभी मैं धर्मराज के रूप में कहता हूँ–मैं तुम्हारे पापों का खाता चुक्तू कराता हूँ, योगबल से। जब पाप का खाता चुक्तू हो तुम आत्मा को उड़ने लिए पंख मिलें। माया ने पंख तोड़ डाले हैं। अभी यह पाप की दुनिया मैं खत्म करने आया हूँ। मैं आता ही हूँ पावन बनाने। इसलिए अब गफलत मत करो। मैं तुम्हारे लिए बड़ी अच्छी सौगात ले आया हूँ, तो फिर ऐसा लायक बनना चाहिए। बहुत बड़ी लॉटरी है। बाबा माया की जंज़ीरों से लिबरेट करने आए हैं। कहते हैं लिबरेट तो सबको करूँगा; परंतु वे सज़ा खाकर, दुखी होकर मरेंगे और तुम बिल्कुल आराम से बाबा की याद में शरीर छोड़ देंगे। पहले से ही मालूम पड़ेगा। कोई ऋषि–मुनि जो अच्छे योगी होते हैं, उन्हों को पहले से पता पड़ता है। ऐसे बैठे–2 शरीर छोड़ देते हैं। उन्हों का रजोगुणी सन्यास, हमारा तो सतोप्रधान सन्यास है। जानते हैं कि भविष्य में हम ऐसे बैठे–2 शरीर छोड़ देंगे (सर्प का मिसाल) पहले से सा॰ हो जाता है। बड़े–2 योगी जो होते हैं उन्हों को भी पहले से पता पड़ जाता है कि यह तमोगुणी शरीर अब छोड़ना है। वहाँ तो बहुत अच्छे शरीर रहते हैं; बाल, युवा, वृद्ध स्टेजिस तो आती ही है। एक शरीर छोड़ दूसरा लेना है। एक मोहजीत की कथा सुनाते हैं ना। वहाँ कब दुख होता नहीं। जब शरीर की अवस्था पूरी होती है तो सा॰ होता है तो एक शरीर छोड़ दूसरा जाकर लेते हैं। इसको कहा जाता है माया अथवा काल पर जीत। बाबा खुद कहते हैं मैं कालों का काल हूँ। तुमको काल पर भी जीत पहनाने वाला हूँ। शरीर तो ज़रूर छोड़ना पड़े। शरीर की भी सतो, रजो, तमो स्टेजिस आती है। ऐसे नहीं कि शरीर को रख बैठेंगे। दुनिया को पुराना होना ही है। पुरानी दुनिया को बूढ़ी दुनिया कहेंगे। सत्युग में एकदम जैसे बच्चा है। छोटा बच्चा पवित्र होता है। तो पवित्र नई दुनिया की

बालक अवस्था है, जिसको सत्युग नई दुनिया कहा जाता है। बाबा आकर नई दुनिया को जन्म दे पुरानी खलास करते हैं। सतयुग है सतोप्रधान नई दुनिया। उसको कहते ही हैं हेविन। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को हेविन ले चलने आया हूँ। भल घर में रहते ज्ञान सुनते रहो। स्त्री पति को, पति स्त्री को, बच्चों को सुनाते रहें तब ही घर स्वर्ग बने। अभी बाबा हमको गुलगुल बना रहे हैं। मोस्ट बिलवेड बाप है। गॉड एक ही है। बीज एक है उनका झाड़ भी एक है। यदि अनेक बीज होते हैं, तो अनेक झाड़ भी होते हैं। बीज क्रियटर एक ही है। अब बाप कहते हैं यह दुनिया खलास होनी है। इसलिए अब मेरे से सदा सुख का वर्सा लो। वहाँ है ही प्रारब्ध, दुःख की बात नहीं। वो बाप, टीचर, सत्गुरु, धर्मराज भी है। बुद्धि में यह आना चाहिए हमको मोस्ट बिलवेड बाप गोद में ले रहे हैं। मोस्ट बिलवेड टीचर पढ़ाते हैं। मोस्ट बिलवेड सत्गुरु मुक्ति–जीवनमुक्ति में ले जाते हैं। तुम सब इतने बच्चे बने हो। इनको कहते हैं प्रजापिता। **K** की तो बात ही नहीं। **K** को कैसे इतने बच्चे व रानियाँ होंगी? बाबा कहते हैं, बच्चे 5000वर्ष पहले भी हमने तुमको राजयोग सिखला, ज्ञान सिखला स्वर्ग का मालिक बनाया था और अब भी प्रैक्टिकल में बना रहे हैं। दूसरा कोई ऐसे कह न सकते। सृष्टि के रचयिता और रचना की आदि–मध्य–अंत का नॉलेज कोई को नहीं है। रचयिता ही मनुष्य सृष्टि का बीज निराकार क्रियटर है। वो बाप कहते हैं तुम्हारे से बहुत पाप हुये हैं। अब हमारा बन वर्सा लो। अभी लेंगे तो कल्प–2 वर्सा लेंगे। इसलिए बाप कहते हैं और संग बुद्धियोग तोड़ एक संग जोड़ो। बाबा आप कितने मीठे हो, आपसे हम आदि–मध्य–अंत का राज़ समझ नॉलेजफुल बन गये हैं। हम भी अब पवित्र बनने से 21जन्म सदा पवित्र रहेंगे। आप सुख के सागर हो, हम भी सुखी रहेंगे, स्वर्ग का वर्सा मिलता है ना। बाप कहते हैं तुम बच्चों लिए बड़ी लॉटरी लाए हैं। तुम एवर हेल्दी–वेल्दी बन जावेंगे। भारत ऐसा हेल्दी–वेल्दी था। उनको कोई बहिश्त कहते हैं, कोई हेविन कहते हैं, तो मीठी चीज़ है ना। अभी तो नर्क है। बाबा स्वर्ग जाने पुरुषार्थ करा रहे हैं। तुम जानते हो स्वर्ग में कितने जन्म रहेंगे। अभी यह नर्क मुर्दाबाद, स्वर्ग ज़िंदाबाद हो रहा है। तो ऐसे बाप से पूरा वर्सा लेना चाहिए ना। झोली भरनी चाहिए। इसमें गफलत न करनी चाहिए और इसमें चाहिए संग। यहाँ तो बाप पढ़ाते हैं। बाहर जाने से माया का संग हो जाता है। माया गुप्त रीति बड़ा धोखा दे... जब तक पक्का निश्चय न हुआ है तब तक संग अच्छा चाहिए। कोई थोड़ा–बहुत भी सुनते हैं तो प्रजा में आवेंगे। .....को सोने के महल तो नहीं मिलेंगे। जो बाबा का सपूत बच्चा बन सर्विस करते रहेंगे, शरीर निर्वाह अर्थ धंधा भी करते रहेंगे, वो ही पक्का वारिस बन सकते हैं। तुम्हारा यह है सतोप्रधान सन्यास, उन्हों का रजोप्रधान सन्यास; परंतु इस समय तो सबकी तमोप्रधान बुद्धि है। सतो से गिरते–2 अंत में तमोप्रधान हो जाते हैं। भल कितने भी तप, जप, तीर्थ किये हैं करते–2 और ही कलियुग तमोप्रधन बन पड़ा है। सृष्टि को तमोप्रधान बनना ही है। बाबा ने कहा है यह करने से मेरे से कोई नहीं मिलता। अंत में मैं ही आकर सबको ले जाता हूँ; परंतु सम्मुख भी कोई विरले ही आते हैं। सभी नहीं आ सकते। कल्प पहले वाले ही सम्मुख आवेंगे। अभी तो धर्मराज खुद बैठे हैं। कहते हैं, मेरे पास आकर फिर भी तुम पाप करेंगे तो खाल उतारूँगा। बहुत कड़ी सज़ा दूँगा। उसी समय तुम फील करेंगे–हम जन्म व जन्म की सज़ा भोग रहे हैं। धर्मराज बाबा कहते हैं जबकि मैं धर्म का राज्य स्थापन करता हूँ, तो बच्चों को धर्मात्मा बन पूरी मदद करनी चाहिए। जैसे मैं डायरैक्शन देता हूँ, रहो भल कहाँ भी डायरैक्शन लेते

रहो। अपना चार्ट रखो, अपनी कचहरी करो। सारे दिन में कितने पाप इन कर्मइन्द्रियों से किये? मंसा (में) तो बहुत संकल्प आवेंगे; परंतु कर्मइन्द्रियों से विकर्म न करना है। कम्पैनियन भल रखो उन्नति के लिए, विकार में न गिरना। पॉइज़िन की लेन–देन से ही मनुष्य रोगी–भोगी बनते हैं। योगी निरोगी होते हैं। भोगी हैं तो रोगी हैं। सत्युग में रोग, हस्पताल आदि होते नहीं। जबकि निश्चय है, बाबा ऐसे बैकुण्ठ का मालिक बनाते हैं तो कूदना चाहिए। गरीब को साहूकार की गोद मिले तो खुशी से लेगा ना। तो बेहद के बाप की गोद भी क्यों न लेंगे। ऐसे भी नहीं, यहाँ बैठ जाना है। बाबा कहते हैं, डायरैक्शन लेकर फिर और को स्वर्गवासी बनाने लिये पुरुषार्थ करो। यह है ऊँच ते ऊँच धंधा, पतित को पावन बनाना। गुरु लोग खुद ही पतित हैं तो पावन बना न सकें। बाप का बनकर पूरा जो फॉलो करते, उनको ही सपूत बच्चा कहा जाता है। एक कार मम्मा–बाबा कहा, तो फिर धर्मप्रिये धर्म न छोड़िये। ब्रह्मा के बच्चे बने तो ब्राह्मण कुल के हो गये। तो धर्मप्रिये यह ऊँच ते ऊँच धर्म न छोड़िये। इस धर्म से ही ऊँच देवी–देतवा पद मिलेगा, नहीं तो मिल न सके। ब्राह्मण कुल है सबसे ऊँच कुल। जिन्होंने धर्म को छोड़ा है तो धरती पर गिर पड़े हैं। एकदम चट खाते में हैं। इरीलीजियस, अनराइटियस, इनसॉलवेंट बन गये हैं, जबसे धर्म छोड़ा है। गाँधी ने जबसे राज्य लिया है तबसे ही बाद में धर्म छोड़ा है। तो धरती में गिर पड़ते हैं। एकदम कंगाल बन गये हैं। पहले भीख नहीं माँगते थे। एक अब तो भीख माँगते रहते; क्योंकि धर्म को छोड़ा है। धर्म छोड़ने से धरती पर गिर जाते हैं। यह भी लिखना चाहिए, बाबा आकर बच्चों को फिर धर्मवान रिलीजियस बनाते हैं। रिलीजन इज़ माइट कहा जाता है। यह सब प्वाइंट धारण करनी है। यह भी प्वाइंट लिखनी है। यहाँ बहुत संभाल रखनी है। भाई–बइन बने तो फिर क्रिमिनल एसॉल्ट नहीं करना है, नहीं तो धर्मराज पुरी में बहुत भारी सज़ा खानी पड़ेगी। भगवान से प्रतिज्ञा कर फिर कहाँ भूल न करनी चाहिए। अच्छा– ॐ॥